जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है !

शुध्द चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किये जातें है!

(पांडुशिला, सिंघासन ,छत्र ,चंवर प्रातिहार्य , जापमाला , मंगल कलश,पूजा बर्तन चंदोवा,तोरण,झारी)

नोट :- हमारे यहाँ घरो मे उपयोग हेतु , साधुओं के उपयोग हेतु, अनुष्ठानो मे उपयोग हेतु शुध्द देशी घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है !

Contact:-
Sourabh Sagar Indore
9993602663
7722983010
sourabhjn1989@gmail.com

जैन

जय जिनेन्द्र

गाय का शुद्ध देशी घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानो को ध्यान में
रख कर बनाया गया शुद्ध देशी घी

घी ऐसा के दिल जीत जाये !

अब 1kg की पैकिंग में भी उपलब्ध

संपर्क सूत्र

Contact For Order

Sourabh Sagar Indore

Call & Whatsapp:

9993602663,7722983010

All India Home Delivery

श्री विशद
नवग्रह शांति विधान

aM{`Vm

प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति - श्री विशद नवग्रह शांति विधान

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2013 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी

सम्पर्क सूत्र - 09829127533, 09829076085, 9660996425

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान ● मो.: 09416882301

4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

मूल्य - 31/-

-: अर्थ सौजन्य : -

श्री संजयकुमार जैन-एडवोकेट ध.प. सुमी जैन
पुत्र- कुणाल जैन, पुत्री- दिव्या जैन

R/o. WA - 199 B, शकरपुर दिल्ली-92

मो. 9891018830, 9891013330

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट , जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

आद्य वक्तव्य

इंसान के लिए जब सभी दरवाजे बंद हो जाते हैं उस समय भी एक दरवाजा खुला रहता है वह दरवाजा है देव, शास्त्र, गुरु का।

आज के पूर्व इतिहास इसका साक्षी है। कई ऐसे लोग हुए जब उन्होंने अपनी रक्षा के लिए, अपनी आबरू ढकने के लिए दर-दर पर दस्तक दी; जब सभी ने अपना हाथ खींच लिया। उस समय सच्चे भाव से उसने प्रभु को स्मरण किया तो उसे अवश्य ही सहारा मिला। प्रभु के द्वार पर देर दो हो सकती है किन्तु अंधेर नहीं होगा। कहा भी है-

''प्रभु दर्शन से नूर खिलता है, गमे दिल को सरूर मिलता है।
जो करे भाव से भक्ति देव-शास्त्र-गुरु की, उन्हें कुछ न कुछ जरूर मिलता है।।''

लोग कहते हैं इंसान के लिए जो कुछ भी शुभाशुभ, सुख-दुख, अच्छा-बुरा मिल रहा है वह सब पूर्व कर्म के उदय से मिलता है किन्तु कभी-कभी ग्रह चक्र की विपरीत दशा होने से उसका फल विपरीत हो जाता है। ग्रह उदय में आकर इंसान के जीवन का सारा सुख-चैन छीन लेता है और इंसान बैचेन होकर कभी ज्योतिषी के चक्कर लगाते हैं तो कभी तंत्र-मंत्रवादियों के, कभी डॉक्टर के द्वार पर दस्तक देते हैं तो कभी पाखण्डियों के द्वार पर इस विषम परिस्थिति में ग्रह शांति हेतु भगवान जिनेन्द्र की आराधना से ग्रहों की उग्र दशा शांत होती है अतः नवग्रह को शांत करने हेतु यह **'विशद नवग्रह शांति विधान'** की रचना करने का भाव मन में आया जिससे हमारे लिए त्रैकालिक शांति हो और हम साता से जीवन जी सकें।

हम यही भावना भाते हैं कि हमारा हर कदम भगवान जिनेन्द्र के दर्शन पूजन भक्ति की ओर बढ़े। हर सुबह भगवान के द्वार पर हो और हम शाम भगवान की भक्ति करते हुए व्यतीत हो। अंतिम भावना के साथ-

''भगवान मेरी नजरों में, वह तासीर हो जाए।
नजर जिस चीज पर डालूँ, तेरी तस्वीर हो जाए।।''

नवग्रह शांति विधान में नवग्रहों से संबंधित 24 जिन की पूजा एवं प्रत्येक ग्रह संबंधी जिनेन्द्र प्रभु की पूजा एवं पंचकल्याणक के अर्घ्य समर्पित किये गये हैं। सभी भव्य जन यह पूजा विधान कर ग्रह शांति प्राप्त करके जीवन मंगलमय बनाए। इसी भावना के साथ 'नमः सिद्धेभ्य'।

- आचार्य विशदसागरजी

ग्रह सम्बन्धी मंत्र

रवि. (1) सूर्य ग्रह : ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभस्वामिने नमः ॐ णमो सिद्धाणं।
सोम. (2) चन्द्रग्रह : ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभस्वामिने नमः ॐ णमो अरिहंताणं।
मंगल. (3) मंगलग्रह : ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यस्वामिने नमः ॐ णमो सिद्धाणं।
बुध. (4) बुधग्रह : ॐ ह्रीं श्री विमलनाथस्वामिने नमः ॐ णमो उवज्झायाणं।
गुरु. (5) गुरूग्रह : ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवस्वामिने नमः ॐ णमो आइरियाणं।
शुक्र. (6) शुक्रग्रह : ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ स्वामिने नमः ॐ णमो अरिहंताणं।
शनि. (7) शनिग्रह : ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथस्वामिने नमः ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं।
शनि. (8) राहुग्रह : ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ स्वामिने नमः ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं।
शनि. (9) केतूग्रह : ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथस्वामिने नमः ॐ णमो सिद्धाणं।

सर्व ग्रह अरिष्ट निवारण मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। या ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा सर्व शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

ग्रहों की शांति हेतु कौनसा रत्न कब कैसे धारण करें।

(मंत्र प्रत्येक ग्रह की पूजा के बाद दिया है, उसका जाप करें)

ग्रह	रत्न	धातु	रत्ती	दिन/समय	उंगली
सूर्यग्रह	माणिक	सोना/ताँबा	4¼	रविवार/प्रातः	अनामिका
चन्द्रग्रह	मोती	चाँदी	4 या 5	सोमवार/संध्या	कनिष्ठा
मंगलग्रह	मूंगा	सोना/ताँबा	7 से अधिक	मंगलवार/संध्या	अनामिका
बुधग्रह	पन्ना	सोने में	5 से अधिक	बुधवार/दोपहर	कनिष्ठा
गुरुग्रह	पुखराज	सोने में	3¼ से अधिक	गुरुवार/सुबह	तर्जनी
शुक्रग्रह	हीरा	चांदी/सोना	10 सेंट से अधिक	शुक्रवार/सूर्योदय	अनामिका
शनिग्रह	नीलम	पंचधातु	3¼ से अधिक	शनिवार/दोपहर	मध्यमा
राहुग्रह	गोमेद	पंचधातु	3 या 6	शनिवार/दोपहर	मध्यमा
केतुग्रह	लहसुनियां	पंचधातु	7 या 9	शनिवार/दोपहर	मध्यमा

विनय पाठ

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्।।
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभू, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभू ! करते स्वयं समान।।
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव।।
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ती धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते 'विशद' प्रणाम।।

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धी सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां... *।। पुष्पांजलि क्षिपामि ।।*

(नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)

(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वाद :

''विषय वासना से विरहित, है जो आरम्भ परिग्रह हीन।
सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, सम्यक् तप में रहते लीन।।
मोक्ष मार्ग के राही गुरुवर, कर्मों से करते संग्राम।
विशद भाव से चरण कमल में, जिनके बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं प.पू. .... चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा पीठिका (हिन्दी भाषा)

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं।।
ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु
अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन।।
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्‌शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध।।
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभू जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल।।
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम।।
अरहंतों की शरण को पाएँ, सिद्ध शरण में हम जाएँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाएँ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे।।
अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्यभ्तंर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें।।
अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।

पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया।।
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी।।
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्‌दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान (हिन्दी)

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक हैं।।
मूल संघ में सम्यक् दृष्टी, पुरुषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान।।1।।

जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरू के, लिए 'विशद' होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान।।
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हों भगवान।।2।।

विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान।।
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान।।3।।

परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर हम नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धी भी रखकर के साथ।।
जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादी का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादी की, करते हम पूजन अर्चन।।4।।

हे अर्हन्त ! पुराण पुरुष हे !, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादी द्रव्यों का शुभ, पाया हमने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नी में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करें हवन।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतलनाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्‌भुत अविनाशी, केवल ज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मनः पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान।।
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।1।।
(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिये।)

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पदानुसारिणी, चउ विधि बुद्धी ऋद्धीवान।।
शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।2।।

श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।3।।

प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी।।
शक्ति...।।4।।

जंघा अग्नि शिखा श्रेणी फल, जल तन्तू हों पुष्प महान्।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।
शक्ति...।।5।।

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।।
शक्ति...।।6।।

जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।
शक्ति... ।।7।।

दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारी, करते मन को भाव विभोर।।
शक्ति...।।8।।

आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धी, आशीर्विष दृष्टी विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धी, विडौषधी मल्लौषधि जान।।
शक्ति...।।9।।

क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।।।।
शक्ति...10।।

(इति परम–ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन (समुच्चय)

स्थापना

देवशास्त्र गुरु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में बस एक सहारा है।।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्योः, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आयें हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
हम परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधी प्रदान करो।
हम अक्षत लाए चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
हम काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट कभी न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब 'विशद' मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।

श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थं अनन्त।।

(छन्द तोटक)

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छियालीस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1।।

जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।

श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।
है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।।3।।

जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समिती शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।

गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग–जन के उपकारी हो।
गुरु आतम ब्रह्म बिहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।

जय सर्व कर्म विध्वंश करं, जय सिद्ध शिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।

जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द्र सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।

जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनको यश मंगल गावत हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो:, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय, अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **तीन लोक तिहूँ काल के, नमूँ सर्व अरहंत।**
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिन पूजा

(स्थापना)

कर्मों ने काल अनादी से, हमको जग में भरमाया है।
मिलकर कर्मों के साथ सभी, नवग्रह ने हमें सताया है।।
अब सूर्य चंद्र बुध भौम-गुरू, अरु शुक्र शनी राहू केतू।
आह्वानन करते जिनवर का, हम नवग्रह की शांती हेतू।।
तुमने कर्मों का अन्त किया, फिर अर्हत् पद को पाया है।
प्रभु उभयलोक की शांति हेतु, मेरा भी मन ललचाया है।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनाः ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(गीता छंद)

हम जन्म मृत्यू अरु जरा के, रोग से दुख पाये हैं।
उत्तम क्षमादी धर्म पाने, नीर निर्मल लाये हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के संताप से, मन में बहुत अकुलाए हैं।
अब भव भ्रमण से पार पाने, चरण चंदन लाए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके बहुत अटके जगत में, पार पाने आए हैं।
अक्षय निधि दो नाथ हमको, अक्षत चढ़ाने लाए हैं।।

नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विषय तृष्णा के भँवर में, जानकर उलझाए हैं।
ना काम का हो वास उर में, पुष्प लेकर आए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धी, हेतु पद में वंदना।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

मन की इच्छाओं को प्रभुवर, हम पूर्ण नहीं कर पाये हैं।
अब क्षुधा रोग को शांत करें, यह व्यंजन षट्रस लाये हैं।।
नव कोटी से वृषभादी जिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दीपक की शुभ ज्वाला से, अंतर का तिमिर न मिट पाए।
अब मोह अंध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर हम लाए।।
नव कोटी से वृषभादी जिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप सुगंधित द्रव्यमयी, इस सारे जग को महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, यह धूप जलाने हम आए।।
नव कोटी से वृषभादी जिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु लौकिक फल की इच्छा कर, वह लौकिक फल सारे पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, तव चरण श्रीफल ले आए।।
नव कोटी से वृषभादी जिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, अरु दीप धूप फल ले आए।
वसु द्रव्य मिलाकर इसीलिए, यह अर्घ्य चरण में हम लाए।।
नव कोटी से वृषभादी जिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जलधारा देते शुभम्, पूजाकर हे नाथ !
नवग्रह मेरे शांत हों, चरण झुकाएँ माथ।। शांतये शांतिधारा

दोहा– जगत पूज्य तुम हो प्रभो ! जगती पति जगदीश।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व ग्रहारिष्ट शांतिं कुरु–कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **गगन मध्य में ग्रहों का, फैला भारी जाल।**
ग्रह शांती के हेतु हम, गाते हैं जयमाल।।

(चौबोला छन्द)

जगत गुरू को नमस्कार मम्, सद्गुरु भाषित जैनागम्।
ग्रह शांती के हेतु कहूँ मैं, सर्व लोक सुख का साधन।।

श्री विशद नवग्रह शांति विधान

नभ में अधर जिनालय में जिन, बिम्बों को शत् बार नमन्।
पुष्प विलेपन चरू धूप युत, करता हूँ विधि से पूजन।।1।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह होय निवारण, पद्म प्रभू के अर्चन से।
चन्द्र भौम ग्रह चन्द्र प्रभू अरु, वासुपूज्य के वन्दन से।।
बुध ग्रह अरिष्ट निवारक वसु जिन, विमलानन्त धर्म जिन देव।
शांति कुन्थु अर नमि सुसन्मति, के चरणों में नमन् सदैव।।2।।
गुरू ग्रह की शांती हेतू हम, वृषभाजित सुपार्श्व जिनराज।
अभिनन्दन शीतल श्रेयांस जिन, सम्भव सुमति पूजते आज।।
शुक्र अरिष्ट निवारक जिनवर, पुष्पदंत के गुण गाते।
शनिग्रह की शांती हेतू प्रभु, मुनिसुव्रत को हम ध्याते।।3।।
राहू ग्रह की शांति हेतु प्रभु, नेमिनाथ गुणगान करें।
केतू ग्रह की शांति हेतु प्रभु, मल्लि पार्श्व का ध्यान करें।।
वर्तमान चौबीसी के यह, तीर्थंकर हैं सुखकारी।
आधि व्याधि ग्रह शांती कारक, सर्व जगत् मंगलकारी।।4।।
जन्म लग्न राशी के संग ग्रह, प्राणी को पीड़ित करते।
बुद्धिमान ग्रह नाशक जिनकी, अर्चा कर पीड़ा हरते।।
पंचम युग के श्रुत केवली, अन्तिम भद्र बाहु मुनिराज।
नवग्रह शांती विधि दाता पद, 'विशद' वन्दना करते आज।।5।।

दोहा– चौबीसों जिन राज की, भक्ति करें जो लोग।
नवग्रह शांति कर 'विशद', शिव का पावें योग।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सोरठा– चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगल परम।
मंगल करें सदैव, नवग्रह बाधा शांत हो।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मण्डल पूजा प्रारम्भ

दोहा– नवग्रह शांति विधान यह, जग में मंगलकार।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने शौख्य अपार।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

रविवार-सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पदमप्रभु पूजा

(स्थापना)

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर।।
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन।
ग्रह रवि अरिष्ट नाशक जिन का, हम करते उर में आह्वानन्।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल जल को प्रासुक करके, अनुपम सुन्दर कलश भराय।
जन्मादि के दुख मैटन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्त्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का चन्दन शीतल, कंचन झारी में भर ल्याय।
भव आताप मिटावन कारण, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक जल से धोकर तन्दुल, परम सुगन्धित थाल भराय।
अक्षय पद को पाने हेतू, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर सुरभित और मनोहर, भाँति-भाँति के पुष्प मँगाय।
कामबाण विध्वंश करन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत से पूरित परम सुगन्धित, शुद्ध सरस नैवेद्य बनाय।
क्षुधा नाश का भाव बनाकर, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित ले दीप मालिका, घृत कपूर की ज्योति जलाय।
मोह तिमिर के नाशन हेतू, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दस प्रकार के द्रव्य सुगंधित, सर्व मिलाकर धूप बनाय।
अष्टकर्म चउगति नाशन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला केला और सुपारी, आम अनार श्री फल लाय।
पाने हेतू मोक्ष महाफल, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक नीर सुगंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले दीप जलाय।
धूप और फल अष्ट द्रव्य ले, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

माघ कृष्ण की षष्ठी तिथि को, पद्मप्रभू अवतार लिए।
मात सुसीमा के उर आए, जग में मंगलकार किए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को, पृथ्वी पर नव सुमन खिला।
भूले भटके नर-नारी को, शुभम् एक आधार मिला।।
जन्म कल्याणक की पूजा, हम करके भाग्य जगाते हैं।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयोदशी कार्तिक वदि पावन, जग से नाता तोड़ चले।
पद्मप्रभु स्वजन परिजन धन, सबकी आशा छोड़ चले।।

हम भाव सहित वन्दन करते, मम् जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पूनम चैत्र शुक्ल की आई, पद्मप्रभु तीर्थंकर भाई।
सारे कर्म घातिया नाशे, क्षण में केवलज्ञान प्रकाशे।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।
पद्मप्रभु जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ति पाए।।
हम भी मुक्तिवधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाए।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिव पद के धारी।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य (शम्भू छंद)

पद्म प्रभु के चरण कमल में, इन्द्र चढ़ाते पद्म महान्।
भक्ति भाव से अर्चा करते, हम भी करें प्रभू गुणगान।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, बनते हैं श्री जिन तीर्थेश।
भवि जीवों को मोक्ष मार्ग का, देते हैं पावन उपदेश।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं सूर्यग्रह अरिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा - पद्मप्रभ के चरण में, होती पूरण आस।
कल्मष होंगे दूर सब, है पूरा विश्वास।।

तीन योग से प्रभू पद, वन्दन करूँ त्रिकाल।
पूजा करके भाव से, गाता हूँ जयमाल।।

जय पद्मनाथ पद माथ नमस्ते, जोड़–जोड़ द्वय हाथ नमस्ते।
ज्ञान ध्यान विज्ञान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।
भव भय नाशक देव नमस्ते, सुर–नर कृत पद सेव नमस्ते।
पद्मप्रभ भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।
आतम ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते।
पद झुकते शत् इन्द्र नमस्ते, ज्ञान पयोदधि चन्द्र नमस्ते।।
भवि नयनों के नूर नमस्ते, धर्म सुधारस पूर नमस्ते।
धर्म धुरन्धर धीर नमस्ते, जय–जय गुण गम्भीर नमस्ते।।
भव्य पयोदधि तार नमस्ते, जन–जन के आधार नमस्ते।
रागद्वेष मद हनन नमस्ते, गगनाङ्गण में गमन नमस्ते।।
जय अम्बुज कृत पाद नमस्ते, भरत क्षेत्र उपपाद नमस्ते।
मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, कामजयी महावीर नमस्ते।।
विघ्न विनाशक देव नमस्ते, देव करें पद सेव नमस्ते।
सिद्ध शिला के कंत नमस्ते, तीर्थंकर भगवन्त नमस्ते।।
वाणी सर्व हिताय नमस्ते, ज्ञाता गुण पर्याय नमस्ते।
वीतराग अविकार नमस्ते, मंगलमय सुखकार नमस्ते।।

(छंद घत्तानन्द)

जय जय हितकारी, करुणाधारी, जग उपकारी जगत् विभु।
जय नित्य निरंजन, भव भय भंजन, पाप निकन्दन पद्मप्रभू।।

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पद्म प्रभ के चरण में, झुका भाव से माथ।
रोग शोक भय दूर हों, कृपा करो हे नाथ! ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

सोमवार-चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ पूजा

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभु ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

भव सिन्धु में भटके फिरे, अब पार पाने के लिए।
क्षीरोदधि का जल ले आये, हम चढ़ाने के लिए।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चतुर्गति में भ्रमण कर, दुःख अति ही पाए हैं।
हम चउ गती से छूट जाएँ, गंध सुरभित लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके जगत् में कर्म के वश, दुःख से अकुलाए हैं।
अब धाम अक्षय प्राप्ति हेतू, धवल अक्षत लाए हैं।।

श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोग से उद्विग्न हो, कई दुःख हमने पाए हैं।
अब छूटने को भव दुखों से, पुष्प चरणों लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन की इच्छाएँ मिटी न, चरु अनेकों खाए हैं।
अब क्षुधा व्याधी नाश हेतू, सरस व्यंजन लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व अरु अज्ञान से, हम जगत में भरमाए हैं।
अब ज्ञान ज्योती उर जले, शुभ रत्न दीप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अघ कर्म के आतंक से, भयभीत हो घबराए हैं।
वसु कर्म के आघात को, अग्नी में धूप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक सभी फल खाए लेकिन, मोक्ष फल न पाए हैं।
अब मोक्षफल की भावना से, चरण श्री फल लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदिक द्रव्य वसु ले, अर्घ्य शुभम् बनाए हैं।
शाश्वत् सुखों की प्राप्ति हेतू, थाल भरकर लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

सोलह स्वप्न देखती माता, हर्षित होती भाव विभोर।
रत्न वृष्टि करते हैं सुरगण, सौ योजन में चारों ओर।।
चैत वदी पंचम तिथि प्यारी, गर्भ में प्रभुजी आये थे।
चन्द्रपुरी नगरी को, सुन्दर, आकर देव सजाए थे।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशि पावन, महासेन नृप के दरबार।
जन्म हुआ था चन्द्रप्रभु का, होने लगी थी जय-जयकार।।
बालक को सौधर्म इन्द्र ने, ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, मन मयूर तब हर्षाया।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी ग्यारस को प्रभु ने, राज्य त्याग वैराग्य लिया।
पञ्चमुष्टि से केश लुञ्च कर, महाव्रतों को ग्रहण किया।।
आत्मध्यान में लीन हुए प्रभु, निज में तन्मय रहते थे।
उपसर्ग परीषह बाधाओं को, शांतभाव से सहते थे।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी सप्तमी के दिन, कर्म घातिया नाश किए।
निज आतम में रमण किया अरु, केवल ज्ञान प्रकाश किए।।
अर्ध अधिक वसु योजन परिमित, समवशरण था मंगलकार।
इन्द्र नरेन्द्र सभी मिल करते, चन्द्रप्रभु की जय-जयकार।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ललितकूट सम्मेदशिखर पर, फाल्गुन शुक्ल सप्तमी वार।
वसुकर्मों का नाश किया अरु, नर जीवन का पाया सार।।
निर्वाण महोत्सव किया इन्द्र ने, देवों ने बोला जयकार।
चन्द्रप्रभु ने चन्द्र समुज्ज्वल, सिद्धशिला पर किया विहार।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक फाल्गुनशुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य (चौपाई)

जो चिह्न चन्द्रमा पाये, जिन चन्द्रप्रभू कहलाए।
ग्रह चन्द्र के रहे निवारी, जिनके पद ढोक हमारी।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं क्रों श्रीं क्लीं चन्द्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा - चन्द्रप्रभु के चरण में, करते हैं नत भाल।
गुणमणि माला हेतु हम, गाते हैं जयमाल।।

(शंभू छन्द)

ऋषि मुनि यतिगण सुरगण मिलकर, जिनका ध्यान लगाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो ध्यान प्रभू का करते हैं, दुख उनके पास न आते हैं।
जो चरण शरण में रहते हैं, उनके संकट कट जाते हैं।।
अघ कर्म अनादी से मिलकर, भव वन में भ्रमण कराते हैं।
जो चरण शरण प्रभु की पाते, वह उनके पास न आते हैं।।
अध्यात्म आत्मबल का गौरव, उनका स्वमेव वृद्धि पाता।
श्रद्धान ज्ञान आचरण सुतप, आराधन में मन रम जाता।।
तुमने सब बैर विरोधों में, समता का ही रस पान किया।
उस समता रस के पान हेतु, मैंने प्रभु का गुणगान किया।।
तुम हो जग में सच्चे स्वामी, सबको समान कर लेते हो।
तुम हो त्रिकालदर्शी भगवन्, सबको निहाल कर देते हो।।
तुमने भी तीर्थ प्रवर्तन कर, तीर्थंकर पद को पाया है।
तुम हो महान् अतिशयकारी, तुममें विज्ञान समाया है।।
तुम गुण अनन्त के धारी हो, चिन्मूरत हो जग के स्वामी।
तुम शरणागत को शरणरूप, अन्तर ज्ञाता अन्तर्यामी।।
तुम दूर विकारी भावों से, न राग द्वेष से नाता है।
जो शरण आपकी आ जाए, मन में विकार न लाता है।।
सूरज की किरणों को पाकर ज्यों, फूल स्वयं खिल जाते हैं।
फूलों की खूशबू को पाने, मधुकर मधु पाने आते हैं।।

हे चन्द्रप्रभू ! तुम चंदन हो, इस जग को शीतल करते हो।
चन्दन तो रहा अचेतन जड़, तुम पर की जड़ता हरते हो।।
सुनते हैं चन्द्र के दर्शन से, रात्रि में कुमुदनी खिल जाती।
पर चन्द्र प्रभू के दर्शन से, चित् चेतन की निधि मिल जाती।।
तुम सर्व शांति के धारी हो, मेरी विनती स्वीकार करो।
जैसे तुम भव से पार हुए, मुझको भी भव से पार करो।।
जो शरण आपकी आता है, मन वांछित फल को पाता है।
ज्यों दानवीर के द्वारे से, कोइ खाली हाथ न आता है।।
जिसने भी आपका ध्यान किया, बहुमूल्य सम्पदा पाई है।
भगवान आपके भक्तों में, सुख साता आन समाई है।।
जो भाव सहित पूजा करते, पूजा उनको फल देती है।
पूजा की पुण्य निधि आकर, संकट सारे हर लेती है।।
जिस पथ को तुमने पाया है, वह पथ शिवपुर को जाता है।
उस पथ का जो अनुगामी है, वह परम मोक्ष पद पाता है।।
यह अनुपम और अलौकिक है, इसका कोइ उपमान नहीं।
वह जीव अलौकिक शुद्ध रहे, जग में कोइ और समान नहीं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय जिन चन्दा, पाप निकन्दा, आनन्द कन्दा सुखकारी।
जय करुणाधारी, जग हितकारी, मंगलकारी अवतारी।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

शिवमग के राही परम, शिव नगरी के नाथ।
शिवसुख को पाने 'विशद', चरण झुकाते माथ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

मंगलवार-मंगल ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य पूजा

(स्थापना)

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतिदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम, मम् उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

हम काल अनादी से जग में, कर्मों के नाथ सताए हैं।
तुम सम निर्मलता पाने को, प्रभु निर्मल जल भर लाए हैं।।
हम नाश करें मृतु जन्म जरा, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के विषय भोग सारे, हमने भव-भव में पाए हैं।
हम स्वयं भोग हो गये मगर, न भोग पूर्ण कर पाए हैं।।
हम भव तापों का नाश करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल अनंत अक्षय अखंड, अविनाशी पद प्रभु पाए हैं।
स्वाधीन सफल अविचल अनुपम, पद पाने अक्षत लाए हैं।।

अक्षय स्वरूप हो प्राप्त हमें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जग में बलशाली प्रबल काम, उस काम को आप हराए हैं।
प्रमुदित मन विकसित पुष्प प्रभू, चरणों में लेकर आए हैं।।
हम काम शत्रु विध्वंस करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषयों की लालच से, चारों गति में भटकाए हैं।
यह क्षुधा रोग न मैट सके, अब क्षुधा मैटने आये हैं।।
नैवेद्य समर्पित करते हम, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मोह महा मिथ्या कलंक, आदि सब दोष नशाए हैं।
त्रिभुवन दर्शायक ज्ञान विशद, प्रभु अविनाशी पद पाए हैं।।
मोहांधकार क्षय हो मेरा, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है कर्म जगत् में महाबली, उसको भी आप हराए हैं।
गुप्ति आदि तप करके क्षय, कर्मों का करने आये हैं।।
हम धूप अनल में खेते हैं, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।7।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग से अति भिन्न अलौकिक फल, निर्वाण महाफल पाये हैं।
हम आकुल व्याकुलता तजने, यह श्री फल लेकर आये हैं।।
हम मोक्ष महाफल पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सद् असद् द्रव्य जो हैं, उन सबके अर्घ बताए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, हम अर्घ बनाकर लाए हैं।।
हम पद अनर्घ को पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।9।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

छटवीं कृष्ण अषाढ़ की, हुआ गर्भ कल्याण।
सुर नर किन्नर भाव से, करते प्रभु गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भकल्याणक प्राप्त भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, जन्मे श्री भगवान।
सुर नर वंदन कर रहे, वासुपूज्य पद आन।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, तप धारे अभिराम।
सुर नर इन्द्र महेन्द्र सब, करते चरण प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपकल्याणक प्राप्त भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों कृष्ण द्वितिया तिथि, पाये केवलज्ञान।
समवशरण में पूजते, सुर नर ऋषि महान्।।4।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण द्वितीयायां ज्ञानकल्याणक प्राप्त भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों शुक्ला चतुर्दशी, प्रभु पाए निर्वाण।
पाँचों कल्याणक हुए, चंपापुर में आन।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य (शम्भू छंद)

तीन लोक में पूज्य हुए हैं, वासुपूज्य तीर्थंकर देव।
सुर-नर-किन्नर पूजा करते, जिनके चरणों विनत सदैव।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, बनते हैं श्री जिन तीर्थेश।
भवि जीवों को मोक्ष मार्ग का, देते हैं पावन उपदेश।।

ॐ ह्रीं भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीं क्लीं भौम ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा- वासुपूज्य वसुपूज्य सुत, जयावती के लाल।
वसु द्रव्यों से पूजकर, करें विशद जयमाल।।

(छंद मोतियादाम)

प्रभु प्रगटाए दर्शन ज्ञान, अनंत सुखामृत वीर्य महान्।
प्रभु पद आये इन्द्र नरेन्द्र, प्रभु पद पूजें देव शतेन्द्र।।
प्रभु सब छोड़ दिए जग राग, जगा अंतर में भाव विराग।
लख्यो प्रभु लोकालोक स्वरूप, झुके कई आन प्रभु पद भूप।।
तज्यो गज राज समाज सुराज, बने प्रभु संयम के सरताज।
अनित्य शरीर धरा धन धाम, तजे प्रभु मोह कषाय अरु काम।।

ये लोक कहा क्षणभंगुर देव, नशे क्षण में जल बुद-बुद एव।
अनेक प्रकार धरी यह देह, किए जग जीवन मांहि सनेह।।
अपावन सात कुधातु समेत, ठगे बहु भांति सदा दुख देत।
करे तन से जिय राग सनेह, बंधे वसु कर्म जिये प्रति येह।।
धरें जब गुप्ति समिति सुधर्म, तबै हो संवर निर्जर कर्म।
किए जब कर्म कलंक विनाश, लहे तब सिद्ध शिला पर वास।।
रहा अति दुर्लभ आतम ज्ञान, किए तिय काल नहीं गुणगान।
भ्रमे जग में हम बोध विहीन, रहे मिथ्यात्व कुतत्त्व प्रवीण।।
तज्यो जिन आगम संयम भाव, रहा निज में श्रद्धान अभाव।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल, सुभाव मिले नहिं तीनों काल।।
जग्यो सब योग सुपुण्य विशाल, लियो तब मन में योग सम्हाल।
विचारत योग लौकांतिक आय, चरण पद पंकज पुष्प चढ़ाय।।
प्रभु तब धन्य किए सुविचार, प्रभु तप हेतु किए सुविहार।
तबै सौधर्म 'सु शिविका' लाय, चले शिविका चढ़ि आप जिनाय।।
धरे तप केश सुलौंच कराय, प्रभू निज आतम ध्यान लगाय।
भयो तब केवल ज्ञान प्रकाश, किए तब सारे कर्म विनाश।।
दियो प्रभु भव्य जगत उपदेश, धरो फिर प्रभु ने योग विशेष।
तभी प्रभु मोक्ष महाफल पाय, हुए करुणानिधि नंत सुखाय।।
रचें हम पूजा सुभाव विभोर, करें नित वंदन द्वयकर जोर।
मिले हमको शिवपुर की राह, 'विशद' जीवन में ये ही चाह।।

(छंद घत्तानंद)

जय-जय जिनदेवं, हरिकृत सेवं, सुरकृत वंदित, शीलधरं।
भव भय हरतारं, शिव कर्त्तारं, शीलागारं नाथ परं।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चम्पापुर में ही प्रभु, पाए पंच कल्याण।
गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाए पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

बुधवार-बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकर पूजा

(स्थापना)

विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुंथु अरह नमि वीर जिनेश।
बुध अरिष्ट की शांति हेतु प्रभु, ध्याते हैं हम वसु तीर्थेश।।
वचन काय मन पूर्वक करते, शुद्ध हृदय से आह्वानन्।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो अब, करुणाकर मेरे भगवन्।।
हम भक्त खड़े हैं द्वारे पर, कर्मों के नाथ सताए हैं।
अब कर्म बन्ध के नाश हेतु, प्रभु चरण शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुंथू, अरह, नमि, वीर तीर्थंकर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

तन मन की प्यास प्रभू जग में, सदियों से बुझाते आए हैं।
अब जन्म जरा के नाश हेतु, प्रभु प्रासुक जलभर लाए हैं।।
श्री विमलानंत धर्म, शांती जिन, कुंथु अरह, नमि, वीर जिनेश।
अब बुध अरिष्ट की शांति हेतु, प्रभु ध्याते हैं हम वसु तीर्थेश।।1।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव ताप शाप से प्रभु जग में, सदियों से सताते आए हैं।
संसार ताप का शाप मिटे, प्रभु चंदन घिसकर लाए हैं।।
श्री विमलानंत धर्म, शांती जिन, कुंथु अरह, नमि, वीर जिनेश।
अब बुध अरिष्ट की शांति हेतु, प्रभु ध्याते हैं हम वसु तीर्थेश।।2।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय निधि के दातार नाथ !, हम अक्षय पद पाने आये।
ये अक्षय अमल अखंड सुनिर्मल, अक्षत थाल में भर लाए।।

श्री विमलानंत धर्म, शांती जिन, कुंथु अरह, नमि, वीर जिनेश।
अब बुध अरिष्ट की शांति हेतु, प्रभु ध्याते हैं हम वसु तीर्थेश।।3।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है चेतन का शत्रू प्रबल काम, उसको प्रभु मार भगाए हैं।
यह पुष्प सुगंधित मनहर शुभ, चरणों में लेकर आए हैं।।
श्री विमलानंत धर्म, शांती जिन, कुंथु अरह, नमि, वीर जिनेश।
अब बुध अरिष्ट की शांति हेतु, प्रभु ध्याते हैं हम वसु तीर्थेश।।4।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के अगणित व्यंजन खाकर, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
हम क्षुधा रोग के शमन हेतु, नैवेद्य बनाकर लाए हैं।।
श्री विमलानंत धर्म, शांती जिन, कुंथु अरह, नमि, वीर जिनेश।
अब बुध अरिष्ट की शांति हेतु, प्रभु ध्याते हैं हम वसु तीर्थेश।।5।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह अंध का नाश किए, चेतन के दीप जलाए हैं।
हम श्रद्धा ज्ञान के दीप जला, प्रभु चरण शरण में आए हैं।।
श्री विमलानंत धर्म, शांती जिन, कुंथु अरह, नमि, वीर जिनेश।
अब बुध अरिष्ट की शांति हेतु, प्रभु ध्याते हैं हम वसु तीर्थेश।।6।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्मों के कारण जग में, प्रभु गोते खाते आए हैं।
अब कर्म नाश के भाव लिए, शुभ गंध जलाने लाए हैं।।
श्री विमलानंत धर्म, शांती जिन, कुंथु अरह, नमि, वीर जिनेश।
अब बुध अरिष्ट की शांति हेतु, प्रभु ध्याते हैं हम वसु तीर्थेश।।7।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सारे फल छोड़ प्रभू, निर्वाण महाफल पाए हैं।
उस फल को पाने हेतु विशद, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
श्री विमलानंत धर्म, शांती जिन, कुंथु अरह, नमि, वीर जिनेश।
अब बुध अरिष्ट की शांति हेतु, प्रभु ध्याते हैं हम वसु तीर्थेश।।8।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदिक शुद्ध परम, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।
अब पद अनर्घ हो प्राप्त प्रभु, हम अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।
श्री विमलानंत धर्म, शांती जिन, कुंथु अरह, नमि, वीर जिनेश।
अब बुध अरिष्ट की शांति हेतु, प्रभु ध्याते हैं हम वसु तीर्थेश।।9।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

विमलनाथ जेठ बदि दशमी, अनंतनाथ कार्तिक एकम्।
वैशाख सुदी आठें सुधर्म जिन, शांति सुदी भादों सप्तम्।।
कुंथुनाथ सावन सुदी दशमी, अरह सुदी तीज फागुन।
नमीनाथ असौज बदि द्वितिया, वीर सुदी अषाढ़ षष्टम्।।
स्वर्ग से चयकर गर्भ में आये, उनका हुआ गर्भ कल्याण।
बुध अरिष्ट की शांति हेतु हम, करते हैं प्रभु का गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकर गर्भकल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ सुदि माघ चतुर्थी, अनंत ज्येष्ठ बदी बारस।
धर्मनाथ माघ सुदी तेरस, शांतिनाथ बदि ज्येष्ठ चौदस।।
कुंथू जिन वैशाख सुदी एकम्, अरहनाथ मगसिर चौदस।
नमीनाथ अषाढ़ बदि दशमी, सन्मति चैत्र सुदी तेरस।।

सारे जग में मंगल छाया, प्रभु का हुआ जन्म कल्याण।
बुध अरिष्ट की शांति हेतु हम, करते हैं प्रभु का गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकर जन्मकल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ सुदी माघ चतुर्थी, अनंत ज्येष्ठ बदी बारस।
धर्मनाथ माघ सुदी तेरस, शांतिनाथ बदि ज्येष्ठ चौदस।।
कुंथु जिन वैशाख सुदी एकम्, माघ सु चौदस अरह जिनेश।
नमीनाथ श्रावण सुदी षष्ठी, वीर बदी मंगसिर दसमेश।।
देव पालकी लेकर आए, किया प्रभु का तप कल्याण।
बुध अरिष्ट की शांति हेतु हम, करते हैं प्रभु का गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकर तपकल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ माघ सुदि षष्ठी, चैत अमावशऽनंत जिनेश।
धर्मनाथ जिन चैत पूर्णिमा, पौष सुदशमी शांति जिनेश।।
कुंथुनाथ चैत सुदी तृतिया, कार्तिक द्वादशी अरह जिनेश।
नमीनाथ मंगसिर सुदी एकम्, वैशाख सुदशमी वीर जिनेश।।
चार घातिया नाश किए तब, पाए प्रभू ज्ञान कल्याण।
बुध अरिष्ट की शांति हेतु हम, करते हैं प्रभु का गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकर ज्ञानकल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ अषाढ़ बदी षष्ठी, चैत्र अमावश नंत जिनेश।
धर्मनाथ सुदि ज्येष्ठ चतुर्थी, बदी सुचौदस शांति जिनेश।।
कुंथुनाथ वैशाख सुएकम्, चैत्र सुग्यारस अरह जिनेश।
नमीनाथ वैशाख बदी चौदस, कार्तिक अमवास वीर जिनेश।।
सर्व कर्म का नाश किए तब, पाए प्रभु मोक्ष कल्याण।
बुध अरिष्ट की शांति हेतु हम, करते हैं प्रभु का गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकर मोक्षकल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य (शम्भू छंद)

विमलनाथ जी विमल गुणों के, धारी हुए हैं मंगलकार।
जिनके चरण कमल की पूजा, बने पुण्य की शुभ आधार।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, बनते हैं श्री जिन तीर्थेश।
भवि जीवों को मोक्ष मार्ग का, देते हैं पावन उपदेश।।1।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त के कोष रहे हैं, श्री अनन्त मेरे भगवान।
अनन्त चतुष्टय पाने को हम, करते हैं प्रभु का गुणगान।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, बनते हैं श्री जिन तीर्थेश।
भवि जीवों को मोक्ष मार्ग का, देते हैं पावन उपदेश।।2।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ जी धर्मदेशना, देकर करते जग उद्धार।
अतः जगत के प्राणी करते, जिनको वन्दन बारम्बार।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, बनते हैं श्री जिन तीर्थेश।
भवि जीवों को मोक्ष मार्ग का, देते हैं पावन उपदेश।।3।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में शांतिनाथ जी, करते अनुपम शांति प्रदान।
अतः जीव जिन के चरणों में, नितप्रति करते शांति विधान।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, बनते हैं श्री जिन तीर्थेश।
भवि जीवों को मोक्ष मार्ग का, देते हैं पावन उपदेश।।4।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ जी आत्म ध्यान कर, कर्म घातिया किए विनाश।
भव्य जीव जिनकी पूजा कर, करते अपनी पूरी आश।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, बनते हैं श्री जिन तीर्थेश।
भवि जीवों को मोक्ष मार्ग का, देते हैं पावन उपदेश।।5।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव चक्री तीर्थंकर त्रय पद, पाए अरह जिनेश।
भक्त बने चरणों में झुकते, जग के प्राणी अतः विशेष।।

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, बनते हैं श्री जिन तीर्थेश।
भवि जीवों को मोक्ष मार्ग का, देते हैं पावन उपदेश।।6।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबका साथ निभाने वाले, तीर्थंकर गाये नमिनाथ।
पूजा करते अतः भक्त सब, विशद झुकाकर चरणों माथ।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, बनते हैं श्री जिन तीर्थेश।
भवि जीवों को मोक्ष मार्ग का, देते हैं पावन उपदेश।।7।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर अन्तिम तीर्थंकर, बनकर दिए दिव्य संदेश।
जिनके चरण कमल में आके, जीवों का मिट जाता क्लेश।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, बनते हैं श्री जिन तीर्थेश।
भवि जीवों को मोक्ष मार्ग का, देते हैं पावन उपदेश।।8।।

ॐ ह्रीं बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ आं क्रों आं श्री बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल, अनंत, धर्म, शान्तिं, कुन्थु, अरहनमि वर्धमान अष्ट जिनेन्द्रेभ्यो नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

विमल अनंत धर्म अरु शांति, कुंथू अरह नमि वीर जिनेश।
जयमाला गाते जिन गुण की, जग से पार करें तीर्थेश।।

(छंद त्रोटक)

प्रभु सम्यक् दर्शन ज्ञान लहा, सुख प्राप्त किए प्रभु वीर्य अहा।
तुम नाश किए प्रभु कर्म महाँ, तुम सम जग में कोइ और कहाँ।।
तुमको असुरेन्द्र सुरेन्द्र जजै, भुवनेन्द्र खगेन्द्र नरेन्द्र भजै।
तुम सर्व चराचर ज्ञायक हो, अरहंत नमों सुख दायक हो।।
भगवंत ससुंत अनंत तुम्हीं, जयवंत महंत नमंत तुम्हीं।
जग जंतुन के अघ सायक हो, अरहंत नमों सुखदायक हो।।
अकलंक सुपंक विनाशक हो, त्रैलोक्य पति जिन शासक हो।

तुम ज्ञान लिए प्रभु क्षायक हो, अरहंत नमों सुखदायक हो।।
गर्भादिक मंगल मंडित हो, तुम प्रभु भव भाव विहंडित हो।
तुम अजर अमर शिवनायक हो, अरहंत नमों सुखदायक हो।।
जग जीव सरोजन को रवि हो, तुम ज्ञान महान् महाकवि हो।
तुम अचल अमल सब लायक हो, अरहंत नमों सुखदायक हो।।
तुम कर्म कलंक विनाश कियो, तुम केवल धर्म प्रकाश कियो।
नित आनंद वृन्द बधायक हो, अरहंत नमों सुखदायक हो।।
प्रभु भोग अभोग वियोग हरें, जो नियोग अयोग सुयोग धरै।
तुम परमौदारिक कायिक हो, अरहंत नमों सुखदायक हो।।
तुम खेद अछेद औ वेद नहीं, निर्वेद अवेदक भेद नहीं।
तुम काय कषाय खपायक हो, अरहंत नमों सुखदायक हो।।
तुमरे सुर नर गुण गावत् हैं, लय ताल सौं वाद्य बजावत् हैं।
तुम सब ही को सुखदायक हो, अरहंत नमों सुखदायक हो।।
तुम तो अविकार उदार अरे !, न आहार निहार विकार करें।
तुम कर्म के घात बधायक हो, अरहंत नमों सुखदायक हो।।
अविरुद्ध प्रबुद्ध विशुद्ध प्रभु, अति शुद्ध विबुद्ध समृद्ध विभु।
कृतकृत्य जगत त्रय नायक हो, अरहंत नमों सुखदायक हो।।
तुम जिनवर श्रीधर श्रीवर हो, जय श्रीकर, श्रीनर, श्रीहर हो।
जग ऋद्धि सुसिद्धि प्रदायक हो, अरहंत नमों सुखदायक हो।।

(छंद आर्या)

जय विमलादी जिनराज आठ, जिनके हैं उत्तम ठाट बाट।
जय नमीनाथ सन्मति वीरं, मम् दुख दारिद्र मैटो पीरं।।

ॐ ह्रीं बुध अरिष्ट निवारक श्री विमलादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

छंद छप्पय

श्री जिनदेव जगत में सुख के धारी, तारे भव्य अनेक सबहिं के संकटहारी।
नाशे आठों कर्म धर्म को तुमने पाया, कृपा करो हे नाथ ! भक्त ये चरणों आया।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

गुरुवार-गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री ऋषभादि अष्ट तीर्थंकर पूजा

(स्थापना)

जय ऋषभाजित संभव अभिनंदन, सुमति सुपार्श्व शीतल स्वामी।
जय-जय जिनेन्द्र श्रेयांस प्रभू जी, आप हुए अन्तर्यामी।।
मम् गुरु अरिष्ट ग्रह शांत करो, प्रभु चरणों तव शत्-शत् वंदन।
अब मेरे उर के सिंहासन पर, तुम आ तिष्ठो मेरे भगवन्।।
हम भक्त खड़े हैं चरणों में, प्रभु अर्चा करने आए हैं।
यह पुष्प सुगन्धित अनुपम शुभ, प्रभु साथ में अपने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनंदन, सुमति, सुपार्श्व, शीतल, श्रेयांसनाथ तीर्थंकर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

जग भोगों की मृग तृष्णा में, दिन रात भटकते आये हैं।
हम आशा पास के नाश हेतु, शुभ निर्मल जल भर लाये हैं।।
मन मंदिर में मेरे भगवन्, अपने हम तुम्हें बिठाते हैं।
अब गुरु अरिष्ट की शांति हेतु, हम वसु जिनेन्द्र को ध्याते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चन्द्र किरण सम शीतल हैं, शीतलता निज में पाए हैं।
भव ताप निकंदन हे जिनवर ! चंदन चर्चन को आए हैं।।
मन मंदिर में मेरे भगवन्, अपने हम तुम्हें बिठाते हैं।
अब गुरु अरिष्ट की शांति हेतु, हम वसु जिनेन्द्र को ध्याते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अक्षय अमल अखंडित हैं, शुभ अक्षय पद को पाए हैं।
हम अक्षय पद के भाव लिए, प्रभु अक्षय अक्षत लाए हैं।।

मन मंदिर में मेरे भगवन्, अपने हम तुम्हें बिठाते हैं।
अब गुरु अरिष्ट की शांति हेतु, हम वसु जिनेन्द्र को ध्याते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सुरभित ज्ञान सुमन चिन्मय, चैतन्य सदन को पाए हैं।
प्रमुदित मन से यह सुमन सुविकसित, नाथ ! चरण में लाए हैं।।
मन मंदिर में मेरे भगवन्, अपने हम तुम्हें बिठाते हैं।
अब गुरु अरिष्ट की शांति हेतु, हम वसु जिनेन्द्र को ध्याते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद सुधामृत के निर्झर, प्रभु चिर तृप्ती को पाए हैं।
विध-विध व्यंजन के विग्रह से, कई व्यंजन सरस बनाए हैं।।
मन मंदिर में मेरे भगवन्, अपने हम तुम्हें बिठाते हैं।
अब गुरु अरिष्ट की शांति हेतु, हम वसु जिनेन्द्र को ध्याते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन हैं प्रकाश के पुञ्ज श्रेष्ठ, जो चित् प्रकाश को पाए हैं।
प्रभु मोह महातम नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
मन मंदिर में मेरे भगवन्, अपने हम तुम्हें बिठाते हैं।
अब गुरु अरिष्ट की शांति हेतु, हम वसु जिनेन्द्र को ध्याते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख की ज्वाला धू-धू जलती, उस ज्वाला को आप जलाए हैं।
सौरभ दशांग यह धूप शुभम्, हम अर्पण करने आए हैं।।
मन मंदिर में मेरे भगवन्, अपने हम तुम्हें बिठाते हैं।
अब गुरु अरिष्ट की शांति हेतु, हम वसु जिनेन्द्र को ध्याते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की पूजा का फल यह फल, हों शांत शुभाशुभ ज्वालाएँ।
शुभ कल्पवृक्ष के फल सम श्रीफल, ले अर्चन को हम आएँ।।
मन मंदिर में मेरे भगवन्, अपने हम तुम्हें बिठाते हैं।
अब गुरु अरिष्ट की शांति हेतु, हम वसु जिनेन्द्र को ध्याते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुत् तृषा अठारह दोष क्षीण, करके अनर्घ पद पाये हैं।
अभिराम सदन हम पा जाएँ, प्रभु अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
मन मंदिर में मेरे भगवन्, अपने हम तुम्हें बिठाते हैं।
अब गुरु अरिष्ट की शांति हेतु, हम वसु जिनेन्द्र को ध्याते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

आदि प्रभु द्वितीय अषाढ़ बदि, ज्येष्ठ अमावस अजित जिनेश।
फाल्गुन सुदी आठें संभव जिन, वैशाख सुषष्ठी चौथे तीर्थेश।।
सुमतिनाथ सावन सुदि द्वितिया, भादों षष्ठी सुपार्श्व जिनराज।
चैत बदी आठे शीतल जिन, ज्येष्ठ बदी श्रेयांस जिनराज।।
रत्न वृष्टि शुभ देव किए सब, मंगल कीन्हें विविध प्रकार।
गर्भ कल्याणक किया भाव से, अर्घ्य चढ़ाएँ बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकर गर्भकल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत बदी नौमी आदीश्वर, माघ सुदशमी अजित जिनेश।
संभवनाथ पूर्णिमा कार्तिक, माघ सुबारस चौथे तीर्थेश।।
सुमतिनाथ चैत सुदि ग्यारस, श्री सुपार्श्व जेठ बारस।
माघ बदी बारस शीतल जिन, श्री श्रेयांस फाल्गुन ग्यारस।।

आनंदोत्सव किए सभी मिल, मंगल कीन्हें विविध प्रकार।
जन्म महोत्सव किए भाव से, अर्घ्य चढ़ाएँ बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकर जन्मकल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत बदी नौमी आदीश्वर, माघ सुदशमी अजित जिनेश।
माघ पूर्णिमा संभव जिनवर, माघ सुबारस चौथे तीर्थेश।।
सुमतिनाथ बैशाख सित नवमी, श्री सुपार्श्व जेठ बारस।
माघ बदी बारस शीतल जिन, श्री श्रेयांस फाल्गुन ग्यारस।।
भोग छोड़कर योग लिए प्रभु, कारण पाए विविध प्रकार।
तप कल्याणक किए भाव से, अर्घ्य चढ़ाएँ बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकर तपकल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि प्रभू फाल्गुन बदि ग्यारस, पौष सु तेरस अजित जिनेश।
कार्तिक बदी चौथ संभव जिन, पौष सुचौदस चौथे तीर्थेश।।
सुमति प्रभु चैत सुदि ग्यारस, श्री सुपार्श्व बदि षष्ठी फाल्गुन।
पौष बदी चौदस शीतल जिन, माघ अमावस श्रेयांस सुजिन।।
पाये केवलज्ञान प्रभू जी, मंगलकारी अपरम्पार।
आनंदोत्सव करूँ भाव सौं, अर्घ्य चढ़ाएँ बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकर ज्ञानकल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ बदी चौदस आदीश्वर, चैत सुपांचे अजित जिनेश।
चैत शुक्ल षष्ठी संभव जिन, वैशाख तिथि चौथे तीर्थेश।।
सुमतिनाथ चैत सुदि ग्यारस, सुपार्श्व बदी सातैं फागुन।
अश्विन सुदी आठें शीतल जिन, श्री श्रेयांस पूनम श्रावण।।
मुक्ति बधु पाये श्री जिनवर, मंगलकारी अपरंपार।
लाडू देकर दीप जलाएँ, अर्घ्य चढ़ाएँ बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकर गर्भकल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य (चौपाई)

आदिनाथ सृष्टी के कर्त्ता, मुक्ति वधू के हुए जो भर्त्ता।
जिनकी महिमा जग यह गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।1।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ ने कर्म नशाए, फिर तीर्थंकर पदवी पाए।
जिनकी महिमा जग यह गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।2।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्भव जिनवर हुए निराले, शिवपथ श्रेष्ठ दिखाने वाले।
जिनकी महिमा जग यह गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।3।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन पद वन्दन करते, कर्म कालिमा प्राणी हरते।
जिनकी महिमा जग यह गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।4।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ जी साथ निभाते, जीवों को शिवपुर पहुँचाते।
जिनकी महिमा जग यह गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।5।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सुपार्श्व जी मंगलकारी, भवि जीवों के करुणाकारी।
जिनकी महिमा जग यह गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।6।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिन शीतल गुणकारी, शिव पाये बन के अनगारी।
जिनकी महिमा जग यह गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।7।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन श्रेयांस के हम गुण गाते, चरणों में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
जिनकी महिमा जग यह गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।8।।

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, सुपार्श्व, शीतल, श्रेयांस अष्ट जिनेन्द्रेभ्यो नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा– वसु जिनेश चिद् ब्रह्म युत, चिद् ज्ञाता चिद्रूप।
गुण गाऊँ जयमाल कर, पाऊँ आत्म स्वरूप।।

(पद्धड़ि छंद–16 मात्रा)

जय ऋषभ देव जिनवर महान्, तुम धर्म प्रवर्तन किए आन।
षट् कर्म दिया उपदेश आन, दीक्षा धर पाया 'विशद' ज्ञान।।
जय–जय जिनवर श्री अजितनाथ, दो मोक्ष महल का हमें साथ।
हम खड़े सामने जोड़ हाथ, तव चरणों में झुक रहा माथ।।
जय संभव–संभव किए काज, प्रभु मोक्ष महल में किए राज।
हम आए चरणों प्रभू आज, दो मुक्ति वधु का हमें ताज।।
जय अभिनंदन आनंदकार, प्रभु हुए आप संसार पार।
है महिमा प्रभु तुमरी अपार, अब पाऊँ में निज सुपदसार।।
जय सुमतिनाथ देवाधिदेव, तुमको पूजें सुर नर सदैव।
तुमरे गुण गावें सुखद एव, हम रहें चरण में नित स्वमेव।।
जय–जय सुपार्श्व जिन पार्श्वरूप, तुमने पद पाया जग अनूप।
तव चरण झुकावें शीश भूप, मैं भी अब पाऊँ निज स्वरूप।।
जय शीतल जिन शीतल करंत, प्रभु किए कर्म का सर्व अंत।
तव चरणों झुकते सर्व संत, तुम पाये प्रभुवर गुण अनंत।।
जय–जय श्रेयांस जिन श्रेयकार, हे नाथ ! आप हैं निराकार।
ये भक्त खड़ा है प्रभू द्वार, अब करो 'विशद' संसार पार।।
जय–जय महिमा जग में विशाल, तुम नाश किए प्रभु जगत् जाल।
तुमको मैं वंदू तीन काल, तुमको सिर नाऊँ विनत भाल।।

ॐ ह्रीं बुध अरिष्ट निवारक श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा– आठ जिनेश्वर पूजते, आठ कर्म हों नाश।
अष्ट ऋद्धि नव निधि मिलें, होवे ज्ञान प्रकाश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

शुक्रवार-शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त पूजा

(स्थापना)

सुर नर किन्नर विद्याधर भी, पुष्पदंत को ध्याते हैं।
महिमा जिनकी जग में अनुपम, उनके गुण को गाते हैं।।
पुष्पदंत हैं कन्त मोक्ष के, उनके चरणों में वंदन।
'विशद' भाव से करते हैं हम, श्री जिनवर का आह्वानन्।।
हे जिनेन्द्र ! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
हे पुष्पदंत ! हे कृपावन्त !, प्रभु हमको दर्श दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौबोला छंद)

कर्मोदय के कारण हमने, विषयों का व्यापार किया।
मिथ्या और कषायों के वश, हेय तत्त्व से प्यार किया।।
जन्म जरादि नाश हेतु हम, चरणों नीर चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

योगों की चंचलता द्वारा, कर्मों का आस्रव होता।
अशुभ कर्म के कारण प्राणी, जग में खाता है गोता।।
भव आतप के नाश हेतु हम, चंदन चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषय रहे क्षणभंगुर, बिजली सम अस्थिर रहते।
पुण्य के फल से मिल पाते हैं, पापी कई इक दुख सहते।।
पद अखंड अक्षय पाने को, अक्षत चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शील विनय जप तप व्रत संयम, प्राप्त नहीं कर पाया है।
मोह महामद में फँसकर के, जीवन व्यर्थ गँवाया है।।
काम बाण के नाश हेतु हम, चरणों पुष्प चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों की मृग तृष्णा में ही, सारे जग में भ्रमण किया।
विषयों की ज्वाला में जलकर, जन्म लिया अरु मरण किया।।
क्षुधा व्याधि के नाश हेतु हम, व्यंजन सरस चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव शास्त्र गुरु सप्त तत्त्व में, जिसको भी श्रद्धान नहीं।
भवसागर में रहे भटकता, उसका हो निर्वाण नहीं।।
मोह तिमिर के नाश हेतु हम, मणिमय दीप जलाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म का फल है दुष्फल, निष्फल जो पुरुषार्थ करे।
अष्ट गुणों को हरने वाले, प्राणी का परमार्थ हरे।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, अनुपम धूप जलाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

शुभ कर्मों के फल से जग के, सारे फल हमने पाए।
मोक्ष महाफल नहीं मिला यह, फल खाकर के पछताए।।

मोक्ष महाफल प्राप्ति हेतु हम, श्रीफल चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल जल सम शुद्ध हृदय, चंदन सम मनहर शीतलता।
अक्षत सम अक्षय भाव रहे, है सुमन समान सुकोमलता।।
हैं मिष्ठ वचन मोदक जैसे, दीपक सम ज्ञान प्रकाश रहा।
यश धूप समान सुविकसित कर, फल श्रीफल जैसे सुफल अहा।।
अपने मन के शुभ भावों का, यह चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य *(शम्भू छंद)*

फाल्गुन कृष्ण पक्ष की नौमी, काकंदीपुर में भगवान।
पुष्पदंत अवतार लिए हैं, रमा मात के उर में आन।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन शुक्ला प्रतिपदा को, जन्में पुष्पदंत भगवान।
नृप सुग्रीव रमा माता के, गृह में हुआ था मंगलगान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन माह शुक्ल की एकम्, दीक्षा धारे जिन तीर्थेश।
पुष्पदंतजी हुए विरागी, राग रहा न मन में लेश।।

हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

कार्तिक शुक्ल दोज पहिचानो, पुष्पदंत तीर्थंकर मानो।
केवलज्ञान प्रभू प्रगटाए, समवशरण तब इन्द्र बनाए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां ज्ञानकल्याणक प्राप्त शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

अष्टमी शुभ आश्विन शुक्ला, सम्मेदगिरि से ध्यान कर।
पुष्पदंत जिन मोक्ष पहुँचे, जगत् का कल्याण कर।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ती भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य (चाल छंद)

श्री पुष्पदन्त जिन स्वामी, कहलाए शिवपथ गामी।
जो कर्म घातिया नाशे, फिर केवलज्ञान प्रकाशे।।
जिनकी हम महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते।
यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, शिवपद पाने हम आये।।

ॐ ह्रीं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंतनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा – मुक्ति वधू के कंत तुम, पुष्पदंत भगवान।
गुण गाएँ जयमाल कर, पाएँ मोक्ष निधान।।

(पद्धड़ि छन्द)

जय–जय जिनवर श्री पुष्पदंत, तुम मुक्ति वधू के हुए कंत।
जय शीश झुकाते चरण संत, जय भवसागर का किए अंत।।
जय फाल्गुन वदि नौमी सुजान, सुरपति कीन्हें प्रभु गर्भ कल्याण।
जय मगसिर वदि एकम् सुकाल, जय जन्म लिया प्रभु प्रातकाल।।
जय जन्म महोत्सव इन्द्र देव, खुश होकर करते हैं सदैव।
जय ऐरावत सौधर्म लाय, जय मेरू गिरि अभिषेक कराय।।
जय वज्रवृषभ नाराच देह, जय सहस आठ लक्षण सुगेह।
प्रभु दीर्घकाल तक राज कीन, मगसिर सित एकम् सुपथ लीन।।
जय पुष्पक वन पहुँचे सुजाय, प्रभु सालिवृक्ष ढिग ध्यान पाय।
जय कर्म घातिया किए नाश, निज आतम शक्ती कर प्रकाश।।
जय कार्तिक सुदि द्वितिया महान्, प्रभु पाये केवलज्ञान भान।
जय–जय भविजन उपदेश पाय, प्रभु के चरणों में शीश नाय।।
प्रभु देते जग को ज्ञानदान, पाते कई प्राणी दृढ़ श्रद्धान।
कई ज्ञान सहित चारित्रधार, करुणाकर जग जन जलधिसार।।
जय भादों सुदि आठें प्रसिद्ध, प्रभु कर्म नाश कर हुए सिद्ध।
जय–जय जगदीश्वर जगत् ईश, तव चरणों में नत नराधीश।।
जय द्रव्यभाव नो कर्म नाश, जय सिद्ध शिला पर किए वास।
जय ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप, तुम हो अनंत चैतन्य रूप।।
निर्द्वन्द्व निराकुल निराधार, निर्मल निष्कल प्रभु निराकार।
श्री जिन के गुण का नहीं पार, भक्तों के हो प्रभु कर्ण धार।।

दोहा – आलोकित प्रभु लोक में, तव परमात्म प्रकाश।
आनंदामृत पानकर, मिटे आस की प्यास।।

ॐ ह्रीं शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा – पुष्पदंत भगवान, ज्ञान सुमन प्रभु दीजिए।
पुष्पांजलि अर्पित विशद, नाथ क्लेश हर लीजिए।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

शनिवार-शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करें नमन् ।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दन ।।
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, करते हैं हम आह्वानन् ।।
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो ।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो ।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

है अनादि की मिथ्या भ्रांती, समकित जल से नाश करें।
नीर सु निर्मल से पूजा कर, मृत्यू आदि विनाश करें ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नो कर्मों का हम, रत्नत्रय से नाश करें।
शीतल चंदन से पूजा कर, भव आताप विनाश करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अविनश्वर पद पाने, निज स्वभाव का भान करें।
अक्षय अक्षत से पूजा कर, आतम का उत्थान करें।।

शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं ।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं ।।3।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

संयम तप की शक्ती पाकर, निर्मल आत्म प्रकाश करें।
पुष्प सुगंधित से पूजा कर, कामबली का नाश करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार का पालन करके, शिवनगरी में वास करें।
सुरभित चरु से पूजा करके, क्षुधा रोग का ह्रास करें ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप आस्रव विनाश कर, केवल ज्ञान प्रकाश करें ।
दिव्य दीप से पूजा करके, मोह महातम नाश करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गुणों की सिद्धी करके, अष्टम भू पर वास करें।
धूप सुगन्धित से पूजा कर, अष्ट कर्म का नाश करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाकर भगवन्, आतम धर्म प्रकाश करें।
विविध फलों से पूजा करके, मोक्ष महल में वास करें ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद ज्ञान का सूर्य उदय कर, अविनाशी पद प्राप्त करें।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उर अनर्घ पद व्याप्त करें।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य *(चौपाई)*

श्रावण कृष्णा दोज सुजान, देव मनाए गर्भ कल्याण।
श्यामा माता के उर आन, राजगृही नगरी सु महान्।।

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी कृष्ण वैशाख सुजान, सुर नर किए जन्म कल्याण।
नृप सुमित्र के घर में आन, सबको दिए किमिच्छित दान।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्ण दशम वैशाख महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
चंपक तरु तल पहुँचे नाथ, मुनि बनकर प्रभु हुए सनाथ।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपोकल्याणक प्राप्त शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमी कृष्ण वैशाख महान्, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
सुरनर करते प्रभु गुणगान, मंगलकारी और महान्।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण द्वादशी महान्, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
मोक्ष पधारे श्री भगवान, नित्य निरंजन हुए महान्।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य (चाल छंद)

हम मुनिसुव्रत को ध्याते, पावन यह अर्घ्य चढ़ाते।
हम सुगुण आपके गायें, प्रभु तुम सम ही बन जायें।।
जिनकी हम महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते।
हम अर्घ्य चढ़ाने लाए, शिवपद पाने को आये।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ ह्रीं क्रों ह्रः श्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा – मुनिसुव्रत मुनिव्रत धरें, त्याग करें जगजाल ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, गाते हैं जयमाल ।।

(पद्धरि छंद)

जय मुनिसुव्रत जिनवर महान्, जय किए कर्म की प्रभू हान ।
जय मोह महामद दलन वीर, दुर्द्धर तप संयम धरण धीर ।।
जय हो अनंत आनन्द कंद, जय रहित सर्व जग द्वंद फंद ।
अघ हरन करन मन हरणहार, सुखकरण हरण भवदुख अपार ।।

जय नृप सुमित्र के पुत्र नाथ, पद झुका रहे सुर नर सुमाथ।
जय श्यामा माँ के गर्भ आय, सावन वदि दुतिया हर्ष दाय ।।
जय राजगृही में जन्म लीन, वैशाख कृष्ण दशमी प्रवीण।
जय जन्म से पाए तीन ज्ञान, जय अतिशय भी पाये महान् ।।
तन सहस आठ लक्षण सुपाय, प्रभु जन्म लिए जग के हिताय।
सौधर्म इन्द्र को हुआ भान, राजगृह नगरी कर प्रयाण ।।
जाके सुमेरु अभिषेक कीन, चरणों में नत हो ढोक दीन।
वैशाख कृष्ण दशमी सुजान, मन में जागा वैराग्य भान ।।
कई वर्ष राज्य कर चले नाथ, इक सहस सु नृप भी चले साथ।
शुभ अशुभ राग की आग त्याग, हो गए स्वयं प्रभु वीतराग ।।
नित आतम में हो गए लीन, चारित्र मोह प्रभु किए क्षीण।
प्रभु ध्यानी का हो क्षीण राग, वह भी हो जाए वीतराग ।।
तीर्थंकर पहले बनें संत, सबने अपनाया यही पंथ।
जिनधर्म का है बस यही सार, प्रभु वीतराग को नमस्कार ।।
वैशाख वदी नौमी सुजान, प्रभु ने पाया कैवल्य ज्ञान।
सुर समवशरण रचना बनाय, सुर नर पशु सब उपदेश पाय ।।
जय-जय छियालिस गुण सहित देव, शत् इन्द्र भक्ति वश करें सेव।
जय फाल्गुन वदि द्वादशी नाथ, प्रभु मुक्ति वधु को किए साथ ।।

(छन्द घत्तानन्द)

मुनिसुव्रत स्वामी, अन्तर्यामी, सर्व जहाँ में सुखकारी।
जय भव भयहारी, आनंदकारी, रवि सुत ग्रह पीड़ा हारी।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – मुनिसुव्रत के चरण के, बने रहें हम दास।
भाव सहित वन्दन करें, होवे मोक्ष निवास।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

शनिवार-राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

नेमिनाथ के श्रीचरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

विषयों के विष की प्याला को, पीकर के जन्म गँवाया है।
नहिं जन्म मरण के दुःखों से, छुटकारा मिलने पाया है।।
हम मिथ्या मल धोने प्रभुजी, शुभ कलश में जल भर लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादि कषायों के कारण, संताप हृदय में छाया है।
मन शांत रहे मेरा भगवन्, यह भक्त चरण में आया है।।
संसार ताप के नाश हेतु, हम शीतल चंदन लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर वैभव जान प्रभू, तुमने सब राग नशाया है।
व्रत संयम तेज तपस्या से, अभिनव अक्षय पद पाया है।।
हो अक्षय पद प्राप्त हमें, हम अक्षय अक्षत लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रबल काम शत्रू जग में, तुमने उसको ठुकराया है।
यह भक्त समर्पित चरणों में, तुमसा बनने को आया है।।
प्रभु कामबाण के नाश हेतु, यह प्रमुदित पुष्प चढ़ाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! भोग की तृष्णा ने, अरु क्षुधा ने हमें सताया है।
मन मर्कट खाकर सब पदार्थ, यह तृप्त नहीं हो पाया है।।
प्रभु क्षुधा रोग के शमन हेतु, यह व्यंजन सरस ले आए हैं।।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहांध महा अज्ञानी हम, जीवन में घोर तिमिर छाया।
मैं रागी द्वेषी बना रहा, निज के स्वभाव से बिसराया।।
मोहांधकार का नाश करें, यह दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सेना ने कैसा, यह चक्र व्यूह रचवाया है।
मुझ भोले-भाले प्राणी को, क्यों उसके बीच फँसाया है।।
अब अष्ट कर्म की धूप जले, यह धूप जलाने लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चित् चेतन का चिंतन, अरु मनन नहीं कर पाया है।
सद्दर्शन ज्ञान चरित का फल, शुभ फल निर्वाण न पाया है।।

अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल अनर्घ पद पाने का, हमने अब भाव जगाया है।
अतएव प्रभू वसु द्रव्यों का, अनुपम यह अर्घ्य बनाया है।।
दो पद अनर्घ हमको स्वामी, यह अर्घ्य संजोकर लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

नेमिनाथ भगवान, कार्तिक शुक्ला षष्ठमी।
पाए गर्भ कल्याण, शिवा देवी उर आ बसे।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठभ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
शौर्य पुरी नगरी शुभम्, समुद्र विजय हर्षित हुए।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठभ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस्र आम्रवन बीच, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
पशु आक्रंदन देख, तप धारे गिरनार पर।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठभ्यां तपकल्याणक प्राप्त राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ ज्ञान कल्याण, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा।
स्वपर प्रकाशी ज्ञान, नेमिनाथ जिन पा लिए।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए पद निर्वाण, आठें शुक्ल अषाढ़ की।
हुआ मोक्ष कल्याण, ऊर्जयन्त के शीर्ष से।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य (चाल छंद)

श्री नेमिनाथ जिनराजा, है तारण तरण जहाजा।
हो केवलज्ञान प्रकाशी, बन गये हैं शिवपुर वासी।।
जिनकी हम महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते।
हम पूजा करने आये, तव गुण गाके हर्षाए।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ ह्रीं क्लीं हूँ राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा– समुद्र विजय के लाड़ले, शिवादेवी के लाल।
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

(राधेश्याम छन्द)

सुरेन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र गणीन्द्र, शतेन्द्र सुध्यान लगाते हैं।
जिनराज की जय जयकार करें, उनका यश मंगल गाते हैं।।
जो ध्यान प्रभू का करते हैं, दुख उनके सारे हरते हैं।
जो चरण शरण में आ जाते, वह भवसागर से तरते हैं।।
तुम धर्ममई हो कर्मजई, तुममें जिनधर्म समाया है।
तुम जैसा बनने हेतु नाथ !, यह भक्त चरण में आया है।।
प्रभु द्रव्य भाव नोकर्म सभी, अरु राग द्वेष भी हारे हैं।
प्रभु तन में रहते हुए विशद, रहते उससे अति न्यारे हैं।।
तुम हो अनन्त ज्ञाता दृष्टा, चिन्मूरत हो प्रभु अविकारी।
जो शरण आपकी आ जाए, वह बने स्वयं मंगलकारी।।
जो मोह महामद मदन काम, इत्यादि तुमसे हारे हैं।
जो रहे असाता के कारण, चरणों झुक जाते सारे हैं।।
ज्यों तरु के नीचे आने से, राही शीतल छाया पाता।

प्रभु के शरणागत आने से, स्वमेव आनन्द समा जाता।।
तुमने पशुओं का आक्रन्दन, लख कर संसार असार कहा।
यह तो अनादि से है असार, इसका ऐसा स्वरूप रहा।।
हे जगत पिता ! करुणा निधान, यह सब तो एक बहाना था।
शायद कुछ इसी बहाने से, राजुल को पार लगाना था।।
राजुल का तुमने साथ दिया, उससे नव भव की प्रीति रही।
पर हमसे प्रीति निभाई न, वह खता तो हमसे कहो सही।।
अब शरण खड़ा है शरणागत, इसका भी बेड़ा पार करो।
कह रहा भक्ति के वशीभूत, हे ! दयासिंधु स्वीकार करो।।
जो शरण आपकी आ जाए, वह भव में कैसे भटकेगा।
जो भक्ति भाव से गुण गाए, वह जग में कैसे अटकेगा।।
तुम तीर्थंकर बाईसवें प्रभु, तुम बाईस परीषह को जीते।
तुमने अनन्त बल सुख पाया, तुम निजानन्द रस को पीते।।
जैसे प्रभु भव से पार हुए, वैसे मुझको भी पार करो।
हमको आलम्बन दे करके, प्रभु इस जग से उद्धार करो।
जो भाव सहित पूजा करते, वह पूजा का फल पाते हैं।।
पूजा के फल से भक्तों के, सारे संकट कट जाते हैं।
हम जन्म–मृत्यु के संकट से, घबड़ाकर चरणों आये हैं।
अब 'विशद' मोक्ष महापद पाने को, चरणों में शीश झुकाये हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय नेमि जिनेशं, हितउपदेशं, शुद्ध बुद्ध चिद्रूपयति।
जय परमानन्दं, आनन्दकंदं, दयानिकंदं ब्रह्मपति।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नेमिनाथ के द्वार पर, पूरी होती आश।
मुक्ति हो संसार से, पूरा है विश्वास।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

केतु-ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनपूजन

(स्थापना)

मल्लिनाथ श्री पार्श्वनाथ जिन, हैं अतिशय के धारी।
कर्म नाशकर मोक्ष पधारे, जग जन मंगलकारी।।
केतु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु हम, चरणों शीश झुकाएँ।
आह्वानन् कर तिष्ठाएँ उर, भक्ती से गुण गाएँ।।
हे करुणाकर करुणा करके, हृदय कमल में आ जाओ।
यह भक्त खड़े हैं आश लिए, तुम दर्शन दो उर में आओ।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्वनाथ जिनेन्द्रौ ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

क्षीर नीर सम जल अति निर्मल, रत्न कलश भर लाये हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, तव चरणों में आये हैं।।
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।
मल्लि पार्श्व जिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्राभ्याम् जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शरद चन्द्र से भी अति शीतल, कर में चंदन लाये हैं।
भव आताप नशाने हेतू, चरण शरण में आये हैं।।
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।
मल्लि पार्श्व जिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्राभ्याम् संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद को पाने हेतू, अक्षत थाल सजाए हैं।
अक्षय अमल अखंड भाव से, तव चरणों में लाए हैं।।

हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।
मल्लि पार्श्व जिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्राभ्याम् अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामबाण की महावेदना, से हम बहुत सताए हैं।
अनुपम पुष्प सुगंधित लेकर, तव चरणों में आए हैं।।
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।
मल्लि पार्श्व जिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्राभ्याम् कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा वेदना को हम अब तक, शांत नहीं कर पाये हैं।
ले नैवेद्य सुसुंदर कर में, क्षुधा नशाने आये हैं।।
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।
मल्लि पार्श्व जिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्राभ्याम् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन थाल में दीप जलाकर, प्रभु चरणों में आये हैं।
मोह महातम नाश करो मम्, आरति करने आये हैं।।
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।
मल्लि पार्श्व जिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्राभ्याम् मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाते रहे आज तक, कर्म नहीं जल पाये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, धूप चरण में लाये हैं।।
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।
मल्लि पार्श्व जिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि–पार्श्व जिनेन्द्राभ्याम् अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, श्रीफल लेकर आये हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतू, भाँति–भाँति फल लाये हैं।।
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।
मल्लि पार्श्व जिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि–पार्श्व जिनेन्द्राभ्याम् मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन के कलश थाल में, अक्षत पुष्प सजाये हैं।
चरुवर दीप धूप फल लेकर, अर्घ चढ़ाने आये हैं।।
हृदय कमल में राजो भगवन्, सुन्दर सुमन बिछाते हैं।
मल्लि पार्श्व जिन के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि–पार्श्व जिनेन्द्राभ्याम् अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

शुभ चैत्र सुदी एकम् मल्ली जिन, माता के गर्भ में आये थे।
इन्द्रों ने छह महीने पहले से, रत्नों के मेह बरसाये थे।।
दूज बदी बैशाख पार्श्व जिन, गर्भ कल्याणक पाए थे।
वामा माता को पहले ही, जो सोलह स्वप्न दिखाए थे।।1।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्याम् अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ जिन जन्म लिया तिथि, मंगसिर सुदि ग्यारस प्यारी।
राजा कुम्भ के गृह में अनुपम, जय–जयकार हुआ भारी।।
पौष बदी ग्यारस को जन्में, पार्श्वनाथ जिनवर स्वामी।
अश्वसेन के गृह में आए, विघ्नहरण अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्याम् अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी ग्यारस दिन पावन, जग से मुख को मोड़ लिए।
मल्लिनाथ जिन वीतराग हो, संयम से नाता जोड़ दिए।।
पौष बदी ग्यारस को भगवन्, पार्श्वनाथ संयम पाए।
तप कल्याणक पूजा करके, इन्द्र नरेन्द्र सब हर्षाए।।3।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक तपकल्याणक प्राप्त श्री मल्लि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्याम् अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष बदी द्वितिया मल्लि जिन, कर्म घातिया नाश किए।
समवशरण रचना सुर कीन्ही, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
चैत्र कृष्ण की चौथ पार्श्व जिन, केवलज्ञान जगाए थे।
सुर नरेन्द्र सब हर्ष मनाए, गंधोदक वर्षाए थे।।4।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्याम् अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरि सम्मेदशिखर के ऊपर, फाल्गुन सुदी पंचमी वार।
मल्लिनाथ जिन मोक्ष पधारे, हुई लोक में जय–जयकार।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन, शेष कर्म सब नाश किए।
पार्श्वनाथ जिन मोक्ष पधारे, सिद्ध शिला पर वास किए।।5।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्याम् अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य (चाल छंद)

श्री मल्लिनाथ जिन देवा, सुर नर करते पद सेवा।
हैं जिनवर जग हितकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।
जिनकी हम महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते।
हम पूजा को द्रव्य लाये, शिवपद पाने को आये।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पार्श्वनाथ हितकारी, उपसर्ग सहे हैं भारी।
हम जिन पद पूज रचाते, पद में यह अर्घ्य चढ़ाते।।
जिनकी हम महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते।
हम पूजा करने आये, शिवपद पाने को आये।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ ह्रीं क्लीं ऐं केतु ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्याम् नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा– मल्लिनाथ जिन पार्श्व के, चरणों विशद प्रणाम।
गाते हम जयमालिका, पूर्ण होय सब काम।।

(तर्ज–तेरे पांच हुए कल्याण प्रभु...)

किया तूने जगत् उद्धार प्रभू, अब मेरा भी तो उद्धार कर दो।
तुम सद्ज्ञानी आतमज्ञानी, हमें भवसागर से पार करो दो।।
नहीं लोक में तुम सम कोई, औरों का कल्याण करे।
नहीं मिला कोइ हमको ऐसा, दूर मेरा अज्ञान करे।।
अब मैं चाहूँ भगवन् मेरे, मैं ज्ञान सहित आचरण करूँ।
वह दान मुझे आचार कर दो।।
सता रहे हैं कर्म अनेकों, मोहादिक ने मोह लिया।
सत्पथ पर न बढ़े कभी भी, मिथ्या ने मजबूर किया।।
अब मैं चाहूँ जिनवर–जिनवर, जो रत्नत्रय है धर्म मेरा।
उस धर्म के अब आधार कर दो।।
भटक रहा अंजान मुसाफिर, मंजिल की शुभ आस लिए।
रफता–रफता बढ़ते आया, दर पे तेरे विश्वास लिए।।
अब मैं चाहूँ भगवन्–भगवन्, तू है दाता ईश्वर सबका।
अब दूर मेरा आगार कर दो।।

तेरी महिमा अगम अगोचर, जग में एक सहारा है।
जग में रहकर जग से न्यारा, सबका तारण हारा है।।
अब मैं चाहूँ भगवन्–भगवन्, जो वीतरागमय रूप तेरा।
उस रूप मेरा आकर कर दो।।
जग को तेरी बहुत जरूरत, तू जग का रखवाला है।
तू है मंदिर तू है मस्जिद, 'विशद' ज्ञान की शाला है।।
अब मैं चाहूँ भगवन्–भगवन्, जो नित्य निरंजन रूप मेरा।
वह निराकार आकार कर दो।।
जिसने प्रभु जी तुमको ध्याया, उसका कष्ट मिटाया है।
बिन मांगे ही सद्भक्तों ने, मन वांछित फल पाया है।।
अब मैं चाहूँ जिनवर–जिनवर, मैं तेरा ही नित ध्यान करूँ।
बस इतना सा उपकार कर दो।।
सबको तुमने दिया सहारा, हमको क्यों प्रभु दूर किया।
हम तो हैं प्रभु दास तुम्हारे, क्यों हमको मजबूर किया।।
अब मैं चाहूँ जिनवर–जिनवर, मैं तेरा ही गुणगान करूँ।
उस ज्ञान का मुझको दान कर दो।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि–पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्याम् जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मल्लि पार्श्व की भक्ति से, केतु ग्रह हो शांत।
जग का सब सुख प्राप्त हो, मुक्ति मिले उपरांत।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

समुच्चय जयमाला

दोहा– ग्रहारिष्ट नव शांत हों, नाथ आपके द्वार।
गाते हैं जयमाल हम, करो प्रभू भव पार।।

(चाल छंद)

यह काल अनादी गाया, प्राणी भव रोग सताया।
कर्मों से सतत सताए, जो चतुर्गति भटकाए।।
कभी नरक गति में जाते, पशुगति में कभी भ्रमाते।
कभी देव गती को जाते, फिर भी वह चैन ना पाते।।
मानव गति में उपजावें, कई रोग व्याधियाँ पावें।
होवे व्यापार में हानी, कभी स्वजन करें मनमानी।।
कभी आके चोर सताएँ, जलवायु के दुख पाएँ।
हो जोर अग्नि का भाई, दुर्घटना हो दुखदायी।।
गृह कलह के मारे प्राणी, पशुधन की होवे हानी।
इस तन में रोग समाए, दुर्गन्धी सतत झराए।।
दुख दारिद्र से छुट जाए, सुख शांती प्राणी पाए।
ज्योतिष में नवग्रह गाए, आकाश में जो बतलाए।।
नर की राशी में जब आवें, तब अपना असर दिखावें।
शुभ ग्रह राशी में भाई, मानव को हो सुखदायी।।
ग्रह अशुभ गृहों में आवें, तव भारी दुख पहुँचावें।
जो ग्रहारिष्ट जिन गाए, उनको नर पूज रचाए।।
तब ग्रह ना असर दिखावें, वह शक्तिहीन हो जावें।
जिन पूजा पुण्य प्रदायी, इस जग में होती भाई।।
जिन अर्चा शांति दिलाए, इसमें जो भाव लगाएँ।
हम पूजा कर सुख पाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।

दोहा– ग्रह शांती के हेतु हम, करते है गुणगान।
विशद शांति पाके प्रभो !, पाए पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं सर्व ग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– जिन पूजा से जीव की, होती पूरी आश।
अनुक्रम से मुक्ती मिले, पावें शिवपुर वास।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

आरती नवग्रह शान्ति

गाएँ जी गाएँ चौबिस जिन की, आरति मंगल गाएँ।
नवग्रह शान्ती करने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, भगवन् के चरणों में नमन्।
रवि अरिष्ट ग्रह शान्ती हेतू, पद्मप्रभु को ध्याएँ।
भक्ति भाव से दीप जलाकर, आरति मंगल गाएँ।।
चन्द्र अरिष्ट की शान्ती हेतू, चन्द्र प्रभू गुण गाएँ।
नवग्रह शान्ती करने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, भगवन् के चरणों में नमन्।।1।।
भौम अरिष्ट की शान्ती करने, वासुपूज्य को ध्याएँ।
चरण वन्दना करने हेतू, चम्पापुर को जाएँ।।
बुध अरिष्ट की शान्ती हेतू, वसु तीर्थंकर ध्याएँ।
नवग्रह शान्ती करने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, भगवन् के चरणों में नमन्।।2।।
गुरु अरिष्ट की शान्ती करने, वृषभादी गुण गाएँ।
अष्ट गुणों की सिद्धी हेतू, अष्ट जिनेश्वर ध्याएँ।।
शुक्र अरिष्ट की शान्ती करने, पुष्पदन्त सिर नाएँ।
नवग्रह शान्ती करने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, भगवन् के चरणों में नमन्।।3।।
शान्ती पाने शनि अरिष्ट की, मुनिसुव्रत को ध्याएँ।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत होय मम्, नेमिनाथ गुण गाएँ।।
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने की, 'विशद' भावना भाएँ।
नवग्रह शान्ती करने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, भगवन् के चरणों में नमन्।।4।।
केतू ग्रह हो शांत प्रभु हम, मल्लि पार्श्व जिन ध्याएँ।
चौबीसों तीर्थंकर जिनकी, आरति कर हर्षाएँ।।
सुख साता से जीवन जीकर, सिद्ध दशा को पाएँ।
नवग्रह शान्ती करने हेतू, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, भगवन् के चरणों में नमन्।।5।।